P: ISSN NO.: 2321-290X
E: ISSN NO.: 2349-980X
RNI : UPBIL/2013/55327
Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
Vol-II * Issue-XII*August-2015

भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था–समसामयिक चुनौतियाँ एवं सम्भावनाएँ

कल्लन सिंह मीना
व्याख्याता,
राजनीति विज्ञान विभाग,
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
गंगापुर, सवाई माधोपुर, राजस्थान

सारांश

लोकतन्त्र श्रेष्ठ शासन प्रणाली है जिसमें राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्र में अधिकतम समानता स्थापित की जाती है। भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है भारतीय लोकतंत्र में उन्हें स्थापित करने का पूर्ण प्रयास किया गया है। भारत में अप्रत्यक्ष लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था है जिसमें सत्ता अन्तिम रूप से समस्त जनता में निवास करती है जिसमें शासन पर नियन्त्रण जनप्रतिनिधियों के माध्यम से रखा जाता है। वर्तमान में भारतीय लोकतन्त्र के समक्ष प्रमुख चुनौतियाँ– साम्प्रदायिकता, क्षेत्रवाद, भाषावाद, जातिवाद, आतंकवाद, भ्रष्टाचार, दलीय मूल्यों का पतन आदि है जो लोकतंत्र के मार्ग में बाधा उत्पन्न करते हैं। भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था को अधिक सार्थक व सफल बनाने के लिए ठोस प्रयास करने होगें। दल बदल को रोकना, चुनाव प्रक्रिया में सुधार, सशक्त व उत्तरदायी विपक्ष हो, हिंसा की राजनीति समाप्त हो, जनता में राष्ट्र के प्रति निःस्वार्थ, जनहित व राष्ट्रहित की भावना पैदा की जाये जिससे साम्प्रदायिकता, क्षेत्रीयता जातिवाद, भाषावाद, भ्रष्टाचार, वंशवाद आदि को पूर्णरूप से समाप्त किया जा सके। तभी स्वस्थ लोकतन्त्र का मार्ग प्रशस्त किया जा सकता है।

मुख्य शब्द : लोकतांत्रिक व्यवस्था, समसामयिक चुनौतियाँ, साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार, राजनीतिक विकास।

प्रस्तावना

मानव जाति के प्रारम्भिक काल से लेकर अब तक अनेक प्रकार की शासन व्यवस्थाएँ विद्यमान रही हैं और शासन के इन विभिन्न रूपों का मानव जाति के राजनीतिक विकास में विशेष महत्व रहा है। अरस्तू के समय से लेकर आज तक साधारणतया शासन व्यवस्था के तीन रूप प्रचलित रहे है राजतंत्र, कुलीनतंत्र और लोकतंत्र किन्तु एक लम्बे समय के ऐतिहासिक अनुभव से यह स्पष्ट हो गया कि राजतंत्र व कुलीतंत्र जनसाधारण के हित में कार्य न करके कुछ विशेष व्यक्तियों या एक वर्ग विशेष के स्वार्थो का ही ध्यान रखते है। इसलिए शासन व्यवस्था के मूल रूप में परिवर्तन करने की आवश्यकता अनुभव की गयी और इस प्रकार के परिवर्तन के रूप में लोकतंत्र को अपनाया गया। इसके बारे में जे.के गेलब्रेथ नामक विद्वान ने कहा है कि ''परिवार और सत्य, सूर्य के प्रकाश और फ्लोरेन्स नाईटेंगल की भाति, लोकतंत्र की श्रेष्ठता सन्देह के परे है।'' विभिन्न विद्वानों द्वारा लोकतंत्र की अलग–अलग परिभाषाएं दी हैं। राष्ट्रपति अब्राहमलिंकन ने कहा कि–''लोकतंत्र शासन का वह रूप है जिसमें जनता का, जनता के द्वारा जनता के लिए शासन हो।'' सीले के अनुसार ''लोकतंत्र मानवीय सभ्यता ओर व्यक्ति के व्यक्ति रूप में महत्व पर आधारित एक ऐसा जीवन मार्ग है जिसका उद्देश्य सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन के इन विविध क्षेत्रों में अधिकाधिक समानता की स्थापना करना और एक सहयोगी समाज की रचना करना है।''

भारत में वर्तमान लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था धीरे–धीरे होने वाले क्रमिक विकास का परिणाम है। इस विकास क्रम में उन सभी परिस्थितियों की स्पष्ट झलक मिलती है जिसमें भारत में ब्रिटिश शासन की स्थापना हुई, उसकी जड़े जमी और फिर उसका अन्त हुआ। 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ और 26 जनवरी 1950 को संविधान लागू हो गया जिसमें भारत एक सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य बन गया। भारत में संसदीय लोकतंत्र के प्रति रूप को अपनाया जो केवल सर्वोत्तम उपलब्धि ही नहीं अपितु व्यवहारिक भी था। इस प्रकार संसदीय लोकतंत्र को एक ऐसा प्रतिरूप स्वीकार किया गया जिसके द्वारा उदारवादी व्यवस्था कायम की जा सके । भारत ने इस प्रकार विश्व लोकतंत्रीय व्यवस्था में सबसे बडे लोकतंत्र के रूप में प्रवेश किया।

भारतीय लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था के लक्षण

भारत विश्व का एक विशाल और महत्वपूर्ण लोकतांत्रिक राष्ट्र है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत में जिस राज व्यवस्था का उदय हुआ उसके मुख्यतया तीन राजनीति को राष्ट्रीय राजनीतिक व्यवस्था के साथ जोड़ने का कार्य किया जाता है। भारतीय संघीय व्यवस्था में राज्य राजनीति का अपना विशेष महत्वपूर्ण स्थान है जिस पर लोकतंत्र की सफलता निर्भर करती है। राज्य राजनीति, राष्ट्रीय राजनीतिज्ञों के लिए प्रशिक्षण स्थल है।

भारत में अप्रत्यक्ष लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था है जिसमें शासन सत्ता अन्तिम रूप से समस्त जनता में निवास करती है। जिसमें शासन पर नियंत्रण जनप्रतिनिधियों के माध्यम से रखा जाता है। भारत में सभी नागरिकों को समान राजनीतिक शक्ति प्राप्त है एवं सभी व्यक्ति कानून के समक्ष समान हैं। वर्तमान में राजनीतिक और नागरिक समानता से आगे बढ़कर सामाजिक और आर्थिक समानता को लोकतंत्र का लक्ष्य समझा जाने लगा है। स्वतंत्रता लोकतंत्र की आत्मा है और लोकतंत्र तभी सम्भव है जबकि सभी व्यक्तियों को राजनीतिक और नागरिक स्वतंत्रताएँ प्राप्त है। राजनीतिक स्वतंत्रता में मत देने का अधिकार, प्रतिनिधि के रूप में निर्वाचित होने का अधिकार, सार्वजनिक पद ग्रहण करने का अधिकार इत्यादि। नागरिक स्वतंत्रता में विचार और भाषण की स्वतंत्रता, प्रेस की स्वतंत्रता, सम्मेलन की स्वतंत्रता, राजनीतिक दल और अन्य संगठन स्थापित करने की स्वतत्रता निवास स्थान, इत्यादि सभी स्वतंत्रता भारतीय नागरिकों को प्राप्त हैं। भारत में बहुमत का शासन है। लोकतंत्र मतपेटी में विश्वास करता है। भारतीय लोकतांत्रिक शासन में शक्ति विभाजन है एवं स्वतंत्र न्यायपालिका है। भारत में शासन व्यवस्था के सफल संचालन के लिए एक संविधान है जो संविधानवाद की भावना पर कार्य करता है। भारतीय लोकतंत्र की मान्यता है कि राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र में जो भी परिवर्तन किये जाने हो, उन सभी परिवर्तनों को शांतिपूर्ण तरीकों से सम्भव बनाया जाना चाहिए।

भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था के समक्ष चुनौतियाँ

भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। भारत में संसदीय लोकतंत्र शासन व्यवस्था है। यह प्रणाली अनेक अच्छाईयाँ एवं बुराईयों के बावजूद हमारे लिए सामान्यतः अनुकूल ही रही है। डा0 भीमराव अम्बेडकर ने कहा है कि– संसदीय लोकतांत्रिक प्रणाली को इसलिये अधिक श्रेष्ठ समझा जाए क्योंकि यह एक उत्तरदायी और साथ ही लचीले स्वरूप की शासन प्रणाली है।'' लेकिन आज भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था के समक्ष गंभीर चुनौतियाँ पैदा हो गयी है जिनके कारण लोकतंत्र खतरे में पड़ रहा है। साम्प्रदायिकता, प्रादेशिकता, भाषावाद, जातिवाद ये चारों ही समस्याऐं भारतीय प्रजातंत्र के लिए खतरा है। क्योंकि इन समस्याओं ने देश के विघटनकारी तत्वों को बढ़ाया है धर्म, भाषा के नाम पर जो दंगे होते हैं, वे प्रजातंत्र के लिए शोभनीय नहीं हैं। साम्प्रदायिक आधारों पर दलों का निर्माण प्रजातंत्र में एक स्तर हैं– राष्ट्रीय राजनीति आधुनिकतावादी तत्वों का प्रतिनिधित्व करती है और स्थानीय राजनीति परम्परावादी तत्वों का। भारतीय संघात्मक व्यवस्था में राज्य वे महत्वपूर्ण कडियॉ है जिनके द्वारा गाँव और शहर को कोढ़ के समान है। बेरोजगारी, आर्थिक विषमता, मंहगाई, भ्रष्टाचार ने प्रजातंत्र की तस्वीर को धुंधला कर दिया है।

सरकार आर्थिक विषमता समाप्त करने की बात तो करती है, पर ऐसा कर नही पायी है। बेरोजगारी, मंहगाई, भ्रष्टाचार के खिलाफ जिस प्रकार से बन्द प्रदर्शन, हड़ताल आदि का आयोजन किया जाता है। इससे प्रजातंत्र कमजोर हो रहा है। हमारी संसदीय व्यवस्था की कमजोरी है एक सशक्त एवं उत्तरदायी प्रतिपक्ष का अभाव जबकि एक सशक्त विरोधी दल देश में स्वस्थ संसदीय व्यवस्था के संचालन की स्थापना के लिए अति आवश्यक है। हिंसा और आंदोलन की राजनीति को भी भारतीय प्रजातंत्र का एक दुर्बल हिस्सा कहा जा सकता है। संयुक्त दलीय सरकारों ने भी प्रजातंत्र का मजाक उड़ाया है। सत्ता की लालच में एक ओर ऐसे दल मिल जाते हैं, जो आदर्शो की दृष्टि से एक दूसरे के विपरीत हैं, और दूसरी ओर बहुमत न होने पर सरकार चलाने का प्रयास करते हैं। जिसके परिणाम स्वरूप राजनीतिक अस्थिरता उत्पन्न होती है। दल बदल की राजनीति के कारण हमारी संसदीय लोकतांत्रिक व्यवस्था दूषित हो गयी है। पडोसी देशों की आक्रामक नीतियों ने भी देश की प्रजातंत्रीय जड़ों को हिलाने की कोशिश की है भारत के पड़ोसी देश भारत में प्रजातंत्र की सफलता से बहुत अधिक भयभीत हैं। स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात से नैतिक मूल्यों का लगातार ह्रास हो रहा है। राष्ट्रीय चरित्र को बनाने का कोई प्रयास नहीं किया जा रहा है, चोरी, काला बाजारी, जमाखोरी, मिलावट और प्रशासन भ्रष्टाचार की बुराई दिन प्रतिदिन तेजी से बढ़ रही है। जिससे हमारी आस्थाएँ और निष्ठायें भी डगमगाने लगी हैं। केन्द्र द्वारा राज्य राजनीति को प्रभावित करने के लिये उचित अनुचित प्रयत्न किए जाते हैं। राज्य राजनीति का खण्डित स्वरूप तथा संस्कृति ने राज्यों की राजनीति को बहुत अधिक प्रभावित किया है। चुनावों में हिंसात्मक घटनायें, अवैध मतदान, अपहरण, हत्या तथा आतंकित करना चुनाव जीतने के साधन बन गये हैं। अशिक्षा लोकतंत्र के लिए एक गम्भीर संकट है। भारत में नित नये राजनीतिक दल इस तरह उदित होते हैं, जैसे बरसात के बाद नये–नये कीड़े मकोड़े दिखाई देने लगते हैं। उग्र राजनीतिक दल बन्दी भी गंभीर चुनौती है। लार्ड ब्राइस लिखते हैं कि ''जब राष्ट्र के सामने कोई महत्वपूर्ण प्रश्न न हो तो पदों की प्राप्ति के लिए विरोधी दलों में हमेशा संघर्ष चलता रहता है, मानों खून में लाल एवं श्वेत कणिकाओं के बीच संघर्ष चल रहा हो।'' यह सही है कि संसदीय लोकतंत्र के सामने राजनीतिक अस्थिता, अनुशासनहीनता, देश प्रेम की भावना का अभाव, नैतिकता का पतन, अस्थिरता का वातावरण, मंहगाई, भ्रष्टाचार, साम्प्रदायिकता, भाषावाद, प्रादशिकता, अलगाववाद, सिद्धान्तों का अभाव, दूषित प्रणाली, आतंकवाद गंभीर चुनौतियाँ हैं।

भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था के सुधार के सुझाव व सम्भावनाएं

भारत के लोग संसदीय लोकतंत्र के विरोधी नहीं हैं। भारत में लोकतंत्र के सभी रोगों का निदान अधिक लोकतंत्र क द्वारा ही हो सकता है। देश में संसदीय लोकतंत्र अपनी जड़ें जमा रहा है और छोटे बड़े संकटों का सामना करने की क्षमता उसमें आ गयी है। डॉ0 सुभाष कश्यप ने लिखा है कि ''भारतीय मतदाता किसी भी दल को सत्ता से वंचित कर सकता है और अपने देश की राजनीतिक संरचना तथा इतिहास के प्रवाह को बदल सकता है। यही तथ्य लोकतंत्र का सार और आधार हैं।'' यदि हमें भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था को अधिक सार्थक बनाना है तो ठोस प्रयत्न करने होगें। हमें दल बदल को रोकना होगा ताकि सत्ता हथियानें की विकृत मनोवृति पर काबू पाया जा सकें। 52 वां तथा 91 वां संवैधानिक संशोधन इस दिशा म किया गया प्रयास सराहनीय है। सशक्त व उत्तरदायी विपक्ष होना चाहिए जिससे वह सरकार पर अंकुश रख सके। सासंदों के विशेषाधिकारों की पुर्नव्याख्या की जानी चाहिए क्योंकि लोकतंत्र में किसी भी व्यक्ति को मनमाना आचरण करने की छूट नहीं होनी चाहिए। संसद व विधान मंडलों के सदस्यों को संसदीय कार्यवाही में प्रशिक्षित किया जाये। सशक्त और सजीव प्रजातंत्र के लिए राष्ट्र के प्रति सचेतता उत्सर्ग की भावना और स्वार्थ परता से बाहर आकर राष्ट्र के प्रति निःस्वार्थ सोच की भावना जन साधारण में पैदा की जाये और उन्हें साम्प्रदायिकता, प्रादेशिकता, जातिवाद आदि को त्याग कर जनहित व राष्ट्रहित की ओर प्रेरित किया जाये तभी देश से बेरोजगारी, भ्रष्टाचार वंशवाद समाप्त होकर वास्तविक प्रजातंत्र कायम हो सकेगा। चुनाव प्रणाली में सुधार किया जाय, हिंसा की राजनीति को समाप्त किया जाये। राजनीतिक दलों में निश्चित सिद्धान्तों का होना आवश्यक है, जिन सिद्धान्तों पर चुनाव लड़ा जाये उन्हें प्राथमिकता से पूण करें। स्वार्थ की भावना के स्थान पर राष्ट्रहित देश हित सर्वोपरि है। प्रो0 लास्की ने ठीक ही कहा है कि ''सतत् जागरूकता ही स्वतंत्रता की कीमत हैं।'' जब तक भारत के लोग जागरूक रहेगें तब तक लोकतंत्र का चिराग इस देश में जलता रहेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ. त्रिवेदी एवं राय–भारतीय सरकार एवं राजनीति, कॉलेज बुक डिपो, जयपुर।
2. फडिया, बीएल–भारतीय शासन एवं राजनीति, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा।
3. कोठारी, रजनी–भारत में राजनीति, ओरियेन्टल लॉगमेन, नई दिल्ली।
4. मिश्र डॉ0 सच्चिदानन्द–भारत में संसदीय संस्कृति और प्रजातंत्र।
5. तिवारी, डॉ. रजनी–भारत में दलीय व्यवस्था और संसदीय लोकतंत्र, अ0प0व0 नई दिल्ली।
6. वर्मा, एस.पी.– भारतीय शासन प्रणाली, सब लाइम पब्लिकेशन्स, जयपुर।
7. मोदी, डॉ. महावीर प्रसाद–भारतीय राजनीति की प्रवृत्तियॉ, कॉलेज बुक डिपो, जयपुर।
8. मोहिनी माथुर–सामन्तवाद से लोकतन्त्र, प्रिन्ट वैल, जयपुर।
9. डॉ. खण्डेला–भारतीय राजनीति का भविष्य, अरिहंत पब्लिशिग हाउस, जयपुर।
10. इण्डिया टूडे क विभिन्न अंक।
11. आउट लुक के विभिन्न अंक।
12. समसामयिकी 2014 क्रॉनिकल बुक्स, नई दिल्ली।